बाल किलकारी

(बिहार बाल भवन का मासिक अखबार)

अंक-10, वर्ष - 2 | अक्टूबर-2016 | मूल्य 10/-

दोस्तो,

हम बच्चे कुछ ज़्यादा ही टीवी देखना पसंद करते हैं? बड़ों से ज़्यादा हम बच्चे ही इन यंत्रों पर लगे रहते हैं। पढ़ाई के वक्त हम फेसबुक, इन्टरनेट और खेल-कूद के वक्त दोस्तों से मोबाइल पर बातें करने में व्यस्त रहते हैं। इंटरनेट और मोबाईल से दुनिया के किसी भी हिस्से से जुड़ सकते हैं। पर दोस्तो! हमें इस बात का आभास है कि हम संवेदनात्मक रूप से अपनों से दूर होते जा रहे हैं। ''मुझे अपने गाँव की याद आती है जब हम अपने दोस्त चुन्नू, मुन्नू, टुन्नू और भी कई बच्चे मिलकर गुल्ली-डंडा, लुका-छिपी खेला करते थे। बड़ा मज़ा आता था। रात को दादी अम्मा से किस्सा-कहानियाँ सुनाने के लिए खूब परेशान करते। दादी-अम्मा भी रोचकता से कहानियाँ सुनातीं और हमसब बड़े गौर से सुना करते।रविवार को दूरदर्शन पर रंगोली का प्रसारण होता। जिसे टोले भर के लोग एक साथ बैठकर देखते। बीच-बीच में एंटिना हिला-डुला कर सिग्नल मिलाते रहते। उस समय गाँव में बिजली का आना तो - जैसे मेहमान का आना होता था। हफ़्ते में एक-दो दिन तो डॉक्टर चाचू की दुकान से बैट्री लाता। उन दिनों, मोबाईल किसी-किसी को ही नसीब था, स्क्रीन टच और स्मार्ट फोन तो बिल्कुल नहीं। डाकिया चाचा को आते देख हम बच्चे खूब शोर मचाते और ''चिट्ठी आई-चिट्ठी आई''की आवाज़ लगाते।

पर दोस्तो, अब ऐसा गाँव कहाँ, सब शहर में बदल गए। और शहर नगर में। अब बच्चों की किलकारियाँ नहीं गूँजती, गूजँती है केवल तो हॉर्न की आवाज़े। बच्चे अब गुल्ली-डंडा, लुका-छिपी नहीं फेसबुक पर चैटिंग करना पसंद करते हैं। हरपल हाथ में मोबाईल रखना तो जैसे शान समझते हैं। निबंध लिखना हो तो इंटरनेट है न। सब यूँ चुटकी में हो जाता है सृजनात्मकता की कमी होती जा रही है।

दोस्तो । क्या हम ऐसी दुनिया बनाना चाहते हैं जहाँ हँसना, खेलना भूल जाएँ। क्या हम थोड़ी अपनी दिनचर्या को बदल नहीं सकते? जरूरत हो तभी मशीनों का प्रयोग करें। दादा-दादी से किस्से- कहानियाँ सुनें। उनके साथ थोड़ा समय बिताएँ। तो शायद कुछ और वेहतर बात बनें। चलिए, एक बार फिर प्रयास करें।

आपका **किलकारी लाल**

कहानी

आम का बगीचा

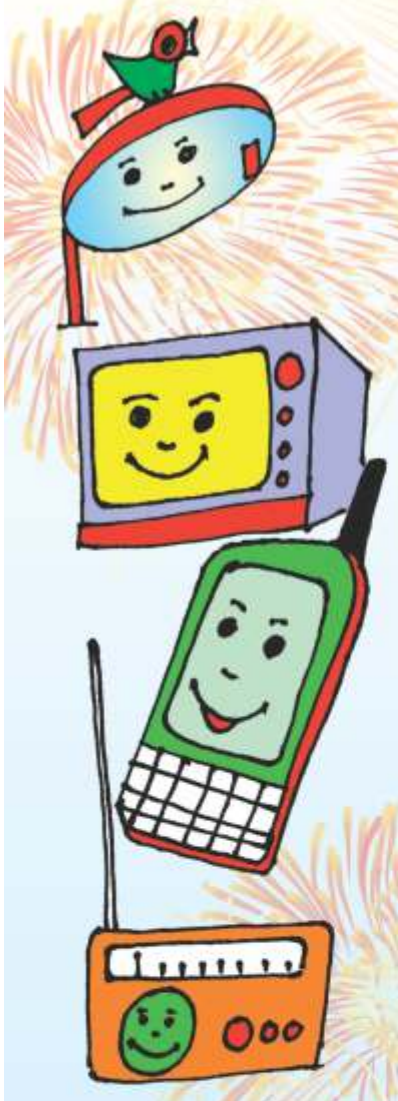

एक लड़का था जिसका नाम मोहन था।वह अपने माता-पिता और एक छोटे भाई के साथ रहता था। उसके पिता किसान थे। उनके पास कुछ बगीचे थे। वे उन बगीचों के फल को बेचकर अपने परिवार का जीवन यापन करते थे। उन दिनों गर्मी का मौसम खत्म हो चुका था और बरसात प्रारंभ हो चुका था। उसके पिता के उस बगीचे में आम के पेड़ लगे थे। उसमें आम के बहुत सारे फलें हुए थे। यह देख उसके पिता जी बहुत खुश थे। एक दिन अचानक उसके बेटे मोहन ने पूछा पिता जी इस बार आप इतने खुश क्यों हैं? पिता जी हंसते हुए कहें, बेटा इस बार हमारे बगीचे में आम बहुत अच्छी हुई है। अच्छी आमदनी होगी और हमारी आर्थिक स्थिति सुधर जायेगी। यह कहते हुए मोहन के पिता ने मोहन से कहा जाओ अपनी माँको खाना लाने के लिए कहा। वह अपनी माँ को कहने जाता है तब तक उसके पिता जी खिड़की से रेडियों उठाकर सुनने लगते हैं रेडियों पर समाचार था कि जिन किसानों के बगीचे में आम का फल है वह अपने बगीचे में कीटनाशक का प्रयाग कर लें क्योंकि बरसात का मौसम होने के कारण कुछ ऐसे कीट उत्पन्न हो गये हैं जो आम के फल को पूर्णत: बरबाद कर देते हैं। उनके पिताजी ने उस समाचार पर ध्यान नहीं दिया। उन्होंने सोचे यह समाचार झूठ-मूठ का है। खाना खाया और सो गये। लेकिन मोहन वहीं बैठा सोचने लगा आम की फसल अच्छी नहीं होगी तो हमारे घर की आर्थिक स्थिति खराब हो जायेगी। वह तुरंत अपनी माँ के पास गया और घर का सामान खरीदने के लिए कुछ पैसे मांगे और उन पैसों का वह बाजार से कीटनाशक ले आया। उसका छिड़काव अपने बगीचे में कर दिया।जब छिड़काव कर वह घर आया तो उसकी माँ पूछी बेटा सामान ले आया तो उसने कहा-नहीं! पिता जी कहें नहीं लाया तो क्या किया आव देखे न ताव और उसे पीटने लगें। अगले दिन वह उठकर बगीचे में जाने लगे। वह घर से थोड़ी दूर ही निकले तो उन्होंने देखा कि सभी जगह हड़कम्प मचा हुआ है। उसके पिता ने किसी व्यक्ति से पूछा अरे भाई क्या हुआ तो उसने कहा गाँव के सभी आम के बगीचों को कीटों ने बरबाद कर दिया। जिन आम के बगीचों के मालिक ने अपने बगीचों में कीटनाशकों का प्रयोग किया है उनके बगीचे सुरक्षित हैं वह यह सुनते ही अपने बगीचों की ओर दौड़ पड़े। वह जब अपने बगीचे के पास पहुंचते हैं तो अपने बगीचे को सुरक्षित देख कर खुश हो गये। वहीं पर कुछ व्यक्ति अपने घर के बाहर बैठे थे। उन्होनें मोहन के पिता को कहा तुम्हारा आम बच गया क्योंकि तुम्हारे बेटे ने बगीचे में कीटनाशकों का प्रयोग कर दिया था। वह यह सुनकर पछताने लगे कि मैने ऐसी भूल कैसे कर दी अपने बेटे को बिना कुछ जाने पीटा। उसने बगीचे का भलाई के लिये खबर सुनकर उसपर अमल किया अब मैं भी हमेशा सभी खबरों को गम्भीरता से लूंगा।

दुनिया मशीनों वाली

बिना मोबाइल कम्प्यूटर के,
यहाँ लोग है खाली-खाली।
घर मे कूलर ए०सी है,
ये दुनिया मशीनों वाली।
सबको चलाना है फेसबुक,
और करना है लाइक।
प्रदूषण फैलाने के लिए,
दौड़ाना खूब है बाइक।
कम्प्यूटर पे बैठे-बैठे,
4G नेट चलाना है।
अब सीढी कहाँ ,
सबको लिफ्ट से ऊपर जाना हैं।
क्रिकेट, फुटबॉल नहीं,
सब तो वीडियोगेम के मारे है।
मशीनों की दुनिया में,
ये आलसी ही तो सारे है।
खाली मशीन भर यहाँ पे,
बिलकुल नहीं हरियाली है।
तुम देख रहे हो दोस्तो,
ये दुनिया मशीनों वाली है।

युवराज सिंह

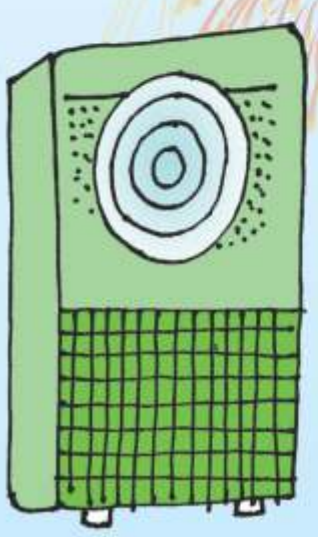

लिख भेजें हमारे पास

दोस्तो !

बाल किलकारी अखबार 'के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य हम बच्चों की आवाज को बुलंद करना है और सृजनात्मक प्रतिभा को निखारना है। आप अपनी लिखी हुई कहानी , कविता, लघुकथा, चुटकुले, पहेली ,चित्र , आपबीती, खेल, अखबार पर प्रतिक्रियाएँ या रचनाएँ भेज सकते हैं। रचना के साथ अपना नाम वर्ग, विद्यालय का पता, सम्पर्क नम्बर अवश्य ही भेजें । चुनी गई रचनाएँ अगले अंक में प्रकाशित की जएगी । हमारा पता इस अंक में है। ढूँढों और अपनी रचनाएँ भेजो।

बाल सम्पादक

हम कितने हैं?

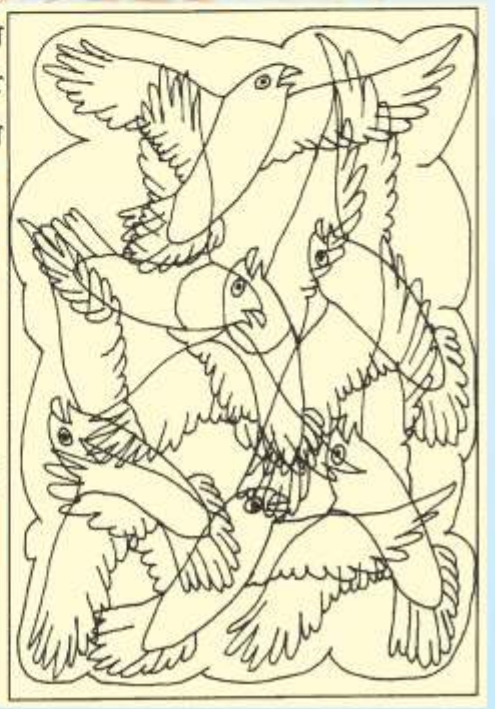

किलकारी फिल्म फेस्ट
प्रेस कॉन्फ्रेन्स

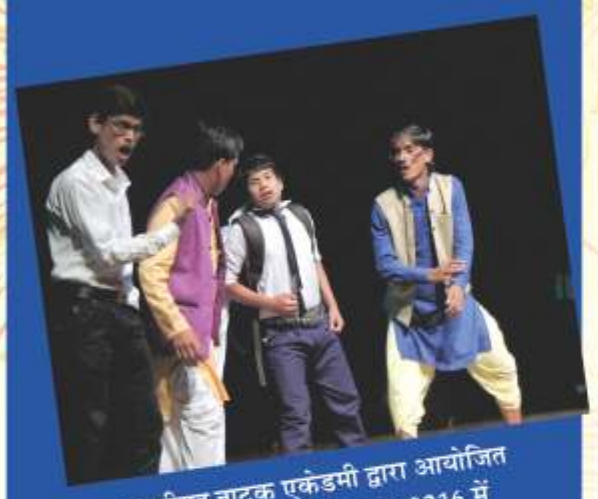

चण्डीगढ़ नाटक एकेडमी द्वारा आयोजित चिल्ड्रेन थियेटर फेस्टिवल-2016 में किलकारी की प्रस्तुति

सुप्रभात मंच द्वारा आयोजित लघु काव्य पाठ में किलकारी के बच्चे

प्रसिद्ध फिल्म एवं सीरियल अभिनेता विनीत कुमार का बच्चों से सीधा संवाद

राज्य स्तरीय कला उत्सव प्रतियोगिता में अंतर्ज्योति, किलकारी बाल केन्द्र की विजेता बच्चे।

मशीनों की दुनिया

''ओ वाओ, हर तरफ टेक्नोलॉजी और स्मार्टनेस।'' पता है दोस्तो, वहाँ पहुँचते ही मैंने यही सोचा । लेकिन किसी ने मुझे अपने हाथों से पकड़ लिया, जैसे मॉनस्टर हो। वह भारी-भरकम शरीरवाला मुझे घूरने लगा। उसका चेहरा बहुत कड़क था, शरीर मशीन की तरह। तभी वह बोला ''तो तुम पास्ट से आयी हो।'' मैंने डर से कुछ नहीं कहा पर वह मुस्कुराया ''हॅल्लो मॉम , क्या आप मेरे साथ ये दुनिया घूमना चाहेंगी तो फिर चलिए। अरे, चौंकिए मत, हमारे माता-पिता नहीं होते और आप इंसानों ने हमें बनाया है तो इसलिए हम आपको मॉम, डैड बुलाते हैं। खों-खों, मुझे गंदी हवा के कारण खाँसी आने लगी, तब उसने मुझे ऑक्सीजन मास्क दिया। वहाँ पेड़-पौधे नकली, इसीलिए वायु प्रदूषण बहुत था। फिर उसने अपना शरीर मेरे बराबर कर लिया । इस दुनिया में कोई इंसान नहीं दिखा। सब मशीनें थी। हमारे यहाँ दुनिया एक रेस्टोरेन्ट है जहाँ खाना टेबल पर खुद पहुँचते हैं यहाँ तो सारे वैसे ही थे। चिड़ियाघरों में जानवर टब में नहाते, प्यूरीफायर का पानी पीते, यहाँ तक कि ऑक्सीजन मास्क भी लगाते।

गाड़ियाँ, हवाई जहाज नैनो चिप भी बन चुका था। बिना ड्राईबर के चलते , खाना भी खाते पर खाना छी:- छी:-छी:बहुत गंदा मशीन ने बताया!'' यहाँ खेत तो ज़्यादा होते नहीं न,फसलें।'' दवाईयों और मशीनें से उगती है इसलिए अचम्भा था, गाँव बिलकुल नहीं थे, नदिया गंदी थी। हर घर रोबोट्स और प्यूरीफायर। मुझे खुशी होती, अजीब भी लगता कि मैं फ्यूचर में हूँ। मैंने पूछा,'' हम इंसानों ने यह दुनिया बनाई तो हम कहाँ है ? काश! यहाँ मशीनों की जगह कुछ इंसान भी होते तो कितना अच्छा होता! वह मशीन गुस्साया '' यह दुनिया अच्छी है , हम मशीने हैं, यहाँ कोई हमारे बिना नहीं और हम ही तो तुम इंसानों को कंट्रोल करते हैं क्योंकि वो रोबोट्स पहले इंसान थे, और आज वे इंसानी रोबोट हैं। इसके बाद हम चाँद और मंगल पर जाएँ, वह तो बिल्कुल धरती जैसा था। तो दोस्तों क्या, तुमने मेरे साथ यह दुनिया घूमी! तब तो तुम समझ गए होंगे न, कि हमारा फ्यूचर एक तरह से मशीनों की ही दुनिया है ? और हमने तो मशीनों का इतना इस्तेमाल किया कि फ्यूचर में हम भी मशीन बन गए, अब तो दिवाली के दीप नकली, मिक्सर , जूसर, नकली पौधे ऊपर से कम्प्यूटर, टीवी, मोबाईल हो सकता है न कि हमारा फ्यूचर सच में ऐसा ही हो । खैर तुम्हारा क्या ख्याल है? ये दुनिया कैसी थी ?

कुछ नया करें

रबड़ का चढ़ने वाला खिलौना

आओ कुछ नया करते हैं। इसके लिये पुरानी रबड़ की चप्पल, परकार, खाली रीफिल, बाँस की पतली डंडी, पतला धागा, मोटा धागा , माचिस की जली तीलियाँ, एक धारदार चाकू सामग्री जुगाड़ कर लें।

अब बनाएँ- हवाई रबड़ की चप्पल में से 'v' आकार के टूकड़ा काटें। कम्पास की नोक से 'v' टुकड़े के दोनें सिरों में एक-एक छेद कर लें । चित्र में दिखाए अनुसार छेद थोड़े तिरछे और पतले धागे के दो टुकड़े लें । दोनों के एक-एक सिरे को बाँस की डंडी के सिरों पर कस कर बाँध लें। डंडी के बीचों बीच एक खांचा बनाएँ। इसमें मोटे धागे का छल्ला बाँधें । धागे के दूसरे सिरों को रीफिलों में से पिरो कर बाहर निकालें। अब उनमें चित्र में दिखाए अनुसार एक -एक माचिस की तीली बाँध दें । बीच के छल्ले को कील से लटका दें।

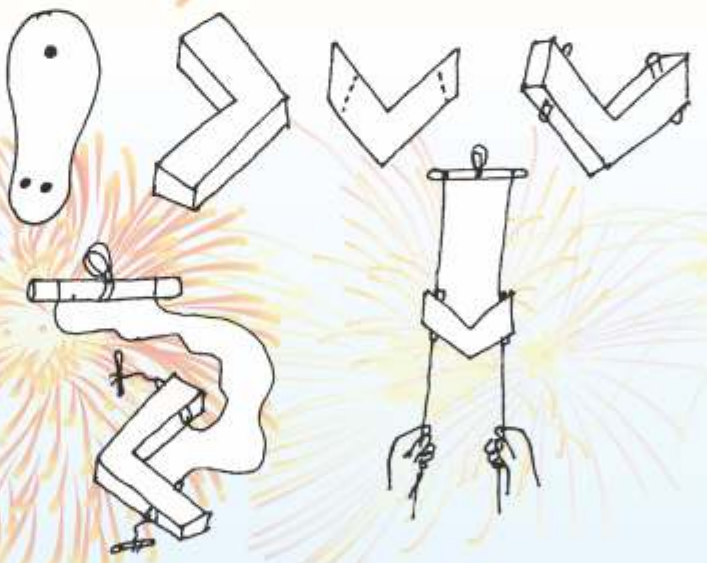

अब दोनों तीलियों को एक-एक हाथ में पकड़े। उन्हें हल्के से खीचें जिससे धागों में कुछ तनाव पैदा हो। अब धागों को बारी-बारी से खीचें-बाएँ, दाएँ, बाएँ-दाएँ। आप देखेंगे कि रबड़ का 'v' अब ऊपर चढ़ रहा है। धागों को ढीला छोड़ने पर रबड़ का 'v' सरक कर नीचे आ जाता है। इस क्रिया को बार-बार दोहरायें।

आओ खेलें खेल

फिर आ गया एक नया खेल खेलाने । खेल का नाम है-छूकर पहचानो इस खेल में जितने चाहें उतने बच्चे खेल-खेल सकते हैं। खेल खेलने के लिए पत्थर , काँच , मोमबत्ती, पंख, कपड़े (रेशम, ऊन, जूट) आदि वस्तुओं का जुगाड़ कर लें ।

अब खेल शुरू करते हैं। चलो हम सभी बच्चे गोलाकार में बैठ जाएँ। बारी-बारी से बच्चे आयेंगे और वस्तुओं को छूकर देखेंगे । और उन गुण को बताना है जैसे - खुरदुरा, चिकना, मुलायम, कठोर आदि। अब उस वस्तुओं को थैली में डाल लें। गोलाकार में बैठ बच्चे बारी-बारी से आयेंगे और थैले में हाथ डालकर एक वस्तु को पहचानकर बाहर निकालने के लिए कहें । उन वस्तुओं पर उनके गुणों पर चर्चा करें। यह खेल आगे बढ़ता रहेगा। है न मजेदार खेल।

जंजालों का संसार

मोबाईल को चलाने में
दिन रात लगे हैं हम
हरदम टी.वी. देखते हैं
पढ़ते लिखते है कम?
नहीं था पहले मोबाईल
कहाँ से हम बातें करतें
सुनकर रेडियो की आवाज
दादू के पास भागा करते

समान लेकर दीदी आई
पैसा देना गई भूल
जोड़ती कैलकुलेटर से
कितना हुआ कुल
छोड़ो छोड़ो मोबाईल को छोड़ो
छोड़ो गुगल को यार
है मशीनों की यह दुनिया
जंजालो का संसार

शुभम श्री

आई घर में काली बिल्ली

आई रूम में टाइम मशीन से
मेरे घर काली बिल्ली
मुझको देख घूर रही थी
लग रही थी थोड़ी सिली।
उसको आती मेरी भाषा
थी उससे मुझको इक आश
काश! कर दे होमवर्क वो मेरा
कहकर जैसी आपकी आज्ञा आका।
मेरे कहने से पहले ही
करने लगी होमवर्क वो मेरा
घूरते रह गया मैं
भौं चढ़ाकर उसका चेहरा।
होमवर्क होने तक
ठंडा हो गया मेरा रूम
बिन ऐ.सी. ऐसा कैसे
चक-धूम-धूम,चक-धूम-धूम।
यह कैसी बिल्ली है
लगता है जादू करती है
अगर यह रह जाए पास मेरे
फिर तो मस्ती ही मस्ती है।
थी वह बिल्ली एक रोबोट
पहने थी वह काला कोट
जो सोचो वो करती है
रिमोट के इशारों पर चलती है।

सृजन कुमार

कहानी

दादा और पोता

ए.सी. अभी अभी कमरे में लगाया गया। कुछ देर तक चहलकदमी होती रही। फिर कमरा शांत हो गया। ए.सी. ऑन था। वह अपनी जगह का मुयाना कर रहा था। हाँ ये जगह उसके लिए ठीक थी । ऊपर से वो सबको देख सकता था । उसके नीचे मेज देखी, कुर्सी देखा। कुछ पिज्जा के डब्बे भी दिखाई दिए। अरे ये ऊपर कौन था। तीन पैरों वाला उसी को घूर रहा था। पहले वो थोड़ा सकुचाया। अरे बड़ा अजीब है घूरना बंद ही नहीं कर रहा । ए.सी. मन ही मन सोचा। उससे रहा नहीं गया और उसने पूछ लिया ''अरे आप मुझे ऐसे क्यों देख रहे है, आप हैं कौन?''

''रिश्ते में तो हम तुम्हारे दादा लगते हैं। नाम है हमारा पंखा।'' पंखे ने जवाब दिया।'' अच्छा तो दादा जी... मुझे तो मेरे बाप का पता नहीं और आपको दादा कैसे मान लूँ।''ए.सी. बोला।'' हमारी दुनिया कुछ उलट-पुलट है यहाँ जो पहले बनता है, उसे सब मालूम होता है जैसे की मुझे देख लो मैं तुम्हारा पूर्वज हूँ और तुमसे पहले बना हूँ। मेरे बाद कुलर बना जिसे तुम अपना पापा कह सकते हो । और उसके बाद तुम बने तुम हुए न मेरे पोते। क्या पता शायद तुम्हारे बाद कोई और बनेगा। तो तुम उसके पापा होंगे । समझे पोता ....।'' पंखा बोला।

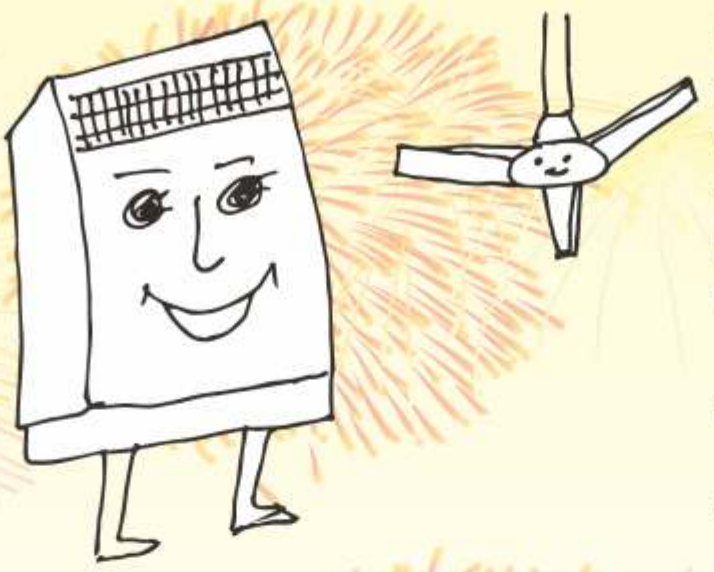

'' ये तो मजेदार है । अच्छा दादा मुझे एक दिक्कत होती है..। बोलूँ क्या ए.सी. बोला।

''हाँ-हाँ बोलो। हमारे पोते को क्या दिक्कत हो रही है ?'' पंखा बोला।

''हाँ हाँ...। मैं बहुत देर से चल रहा हूँ।मेरे हाथ पैर दर्द कर रहे हैं।''ए.सी. बोला ।'' ये तो होना ही था । अच्छा कोई बात नहीं। धीरे-धीरे तुम्हें इसकी आदत पड़ जाएगी । ये मनुष्य हम मशीनों के सहारे पंगु बनते जा रहे हैं । मुझे तो ये रात -दिन चलाते थे । उफ! थकान से चूर-चूर हो जाता था ।''पंखा बोला।''अरे कहीं मुझे भी तो रात-दिन नहीं चलायेंगे।''ए.सी. डरते हुए बोला । अरे नहीं नहीं पोते। तुम बिजली बहुत उठाते हो इसलिए कुछ देर बाद ये तुम्हें बंद कर देंगे । वैसे ,जैसे -जैसे ये इंसान विकसित हो रहे है। इनके विकास में चक्की हमे पीसना पड़ता हैं।''पंखा बोला। अभी वो इतना बोला था कि कमरे में कुछ लोग दाखिल हुए । पंखे को निकाला जा रहा था। ए॰सी॰ बोला,'' दादा ,दादा ये आपको कहाँ ले जा रहे हैं।''पंखे ने लंबी साँस छोड़ी ,'' ये तो होना ही था। अच्छा अब मैं चलता हूँ। पर तुम आनेवाली पीढ़ी को अपने दादा को जरूर बताना ।''ए॰सी॰. देख रहा था। पंखा तो चला गया। ए॰सी॰ भी बंद हो गया था। वो कमरे में नजर दौड़ा रहा था। शायद अपनी तन्हाई के साथी को ढूँढ रहा था।

अभिनंदन गोपाल

ये दुनिया है, कैसी

ये दुनिया है, कैसी?
दुनिया! वो भी मशीनों की,
हर जगह मशीनें ही मशीनें हैं,
चाहे देखो इधर-उधर भी।
अरे! ज़रा सड़क पर देखो।
रामू मोबाइल पर, कर रहा चैट,
उधर छोटे मियाँ,
खेल रहे हैं गेम ऑन नेट।
टी॰वी देखने में छोटी गुड़िया,
हो गई हैं गुम,
पर पढ़ाई के वक्त,
हो जाती है एकदम सुन्न।
छुटकू विराट् गणित के लिए,
यूज करता है कैलक्यूलेटर,
पाँच साल की प्यारी छुटकी,
चला रही कम्प्यूटर।
इंफॉरमेशन के लिए बच्चे,
जिद्द करते हैं इंटरनेट,
और गूगल पर जाकर
मार देते सर्च का सेट।
आज-कल सबने इंटरनेट को,
बनाया हैं अपनी शान,
पर कल क्या होगा,
कौन देगा यह ज्ञान।

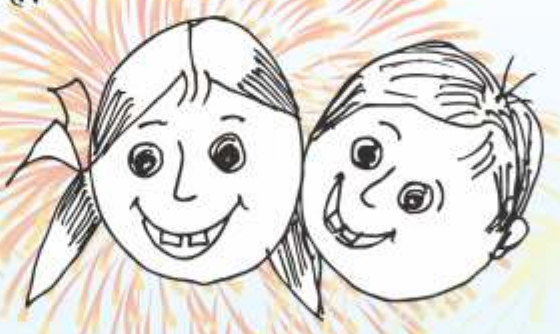

राजेश्वरी

हँसो-हँसाओ

बबलू- पिता जी आप बैल से डरते हैं?
पिता- नहीं बेटा।
बबलू- साँप से,
पिता- उससे भी नहीं।
बबलू- फिर आप किससे डरते हैं?
पिता- सिर्फ तेरी माँ से।

बबलू- तुमने मेरी जेब में हाथ क्यों डाला?
बबली- मुझे ठंड लग रही थी।

बबलू- मुझे तंग न करो मेरे दिमाग में आग लगी है।
बबली- तभी तो मैं कहूँ कि कुछ जलने की गँध कहाँ से आ रही है।

बबलू- बबली, आज कोई चटपटी मसालेदार खबर सुनाइये।
बबली- उसके पहले तुम्हे पाक शास्त्र की पुस्तक लाकर देनी पड़ेगी।

बबलू- बबली तुमने लेटर बॉक्स में खत डाल दिया?
बबली- नहीं!
बबलू- क्यों नहीं डाला?
बबली- कैसे डालता लेटर बॉक्स पर ताला लगा था?

ज़हर ऐसा न पीना है

चक्की सी चलती मशीन,
गेहूँ -सा पिसते हम-तुम।
हर ओर आलस-ही-आलस,
भागते मेहनत से हम-तुम।
न पत्र का इंतजार कहीं,
करते हैं मैसेज फट से!
जोड़-घटाओ होती नहीं,
कलकुलेटर निकला झट से।
खो गई है मेहनत तो,
इस आसानी की भीड़ में।
कहाँ ढूँढे उसे कोई,
दिखता नहीं वह भीड़ में।
हम-तुम क्यों व्यस्त हैं ऐसे,
कम्प्यूटर में, टेलीविजन में।
क्या-क्या हो रहा है भाई,
अंकुरते इस जीवन में।
निकलकर मशीनी दुनिया से,
अपनी ज़िन्दगी जीना है।
कहीं मलते न रह जाएँ हाथ,
ज़हर ऐसा न पीना है।

प्रवीण कुमार

इस अंक के रचनाकार -प्रतिभागी- शुभम्, युवराज, खुशबू, अन्नया, हर्षितराज, तुलसी, राजेश्वरी, सुमन, अतुल, सृजन, जीवित, सौरभ, संजीत
बाल सम्पादक - मुनटुन, प्रवीण, सम्राट, रानी, राहुल, घुँघरु अभिनंदन, प्रियंतरा,
संयोजक - सुधीर कुमार
कार्यकारी सम्पादक - राजीव रंजन श्रीवास्तव
सम्पादक - ज्योति परिहार, निदेशक बिहार बाल भवन किलकारी, पटना
कार्यालय पता - बिहार बाल भवन सैदपुर, किलकारी, पटना-800004 (बिहार)

[No.G1/Mail/Registration/Renewal/PT-73/2015

बूझो तो जानें

- सिर छोटा और पेट बड़ा,
  तीन टाँग पर रहे खड़ा।
  खाता हवा और पीता तेल,
  फिर दिखलाता अपना खेल।

- खाना कभी न खाता वह,
  और न पीता पानी।
  उसकी बुद्धि के आगे तो,
  हार मानते ज्ञानी।

- दो अक्षर का मेरा नाम,
  मेरे बिना चले न काम।
  कहीं नहीं आऊँ- जाऊँ,
  फिर भी आया गया कहलाऊँ।

- तीन अक्षर का मेरा नाम,
  ठंडी हवा देना काम।
  गर्मी में तो बिन मेरे ,
  हो जाता आराम-हराम।

- काला-काला गोल तवे- सा,
  रोटी नहीं पकाऊँ।
  मेरे तन में सुई चुभते ही,
  गाना तुम्हें सुनाऊँ।

- छाता जैसा उल्टा छाता,
  टी०वी० से है उसका नाता।

प्रेरक प्रसंग

एक बार किसी जिज्ञासु ने ईरान के दार्शनिक कवि शेख़सादी से प्रश्न किया, भगवन्! परोपकार बड़ा है या ताकतवर? शेख़सादी नी कहा, 'पहले तुम मेरे एक प्रश्न का उत्तर दो , तभी तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दूँगा ।' यह बताओ कि हातिम के ज़माने में सबसे बड़ा पहलवान कौन था जिज्ञासु ने बहुत सोचा, पर उसे उत्तर न सूझा । अंत में उसने कहा, 'हातिम के उपकार के किस्से तो सारा संसार जानता है, लेकिन उस समय सबसे बड़ा पहलवान कौन था कोई नहीं जानता, क्योंकि उसने कोई ऐसा काम नहीं किया, जिसके कारण उसे आज तक याद रखा जाता। तब शेख़सादी ने कहा इस कथन में ही तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर भी मौजूद है। जिज्ञासु संतुष्ट होकर चला गया। क्योंकि उसने परोपकार की महत्ता को समझ लिया था।

जीवित कुमार

खोजबीन

हवा ठंडी कैसे हो जाती है-एयर कंडीशनर से

दोस्तो एयर कंडीशनर एक विद्युत-चालित मशीन है। यह एक ऐसी मशीन है, जिसके द्वारा कमरे या भवन को गर्मियों में ठंडा एवं सर्दियों में गर्म रखा जा सकता है। इतना ही नहीं, यह कमरे की वायु में उपस्थित नमी, धूल को भी नियंत्रित करता है।

आमतौर पर ऐयर कंडीशनर द्वारा कमरे का तापमान लगभग 20 से०से 25 से० तथा वायु की नमी 35-70% तक रखी जाती है। जानते हो दोस्तो, एयर कंडीशनरों में एक कम्प्रेसर होता है, जो ठंडक पैदा करने वाली फ्रीआन गैस को संपीड़ित करता है। इस संपीड़ित और कंडेंसर कोइलों से यह गैस द्रव अवस्था में आ जाती है। इसमें एक छोटा- सा पंखा होता है, जो कमरे में हवा भेजता है। साथ ही कमरे की गर्म हवा द्रव गैस को फिर से गैस अवस्था में बदल देती है। कमप्रेसर उसे द्रव में बदलता रहता है। यही क्रम प्लांट में चलता रहता है और ठंडी हवा कमरे में पहुँचती रहती है। इसी कारण दोस्तो हमारा कमरा ठंडा रहता है।

प्रस्तुति-सम्राट

मेरा फंडा मम्मी से

अच्छा ! देर से क्यों उठी?
''अलार्म'' ही लेट से बजा।
स्कूल ड्रेस फेंका क्यूँ?
नया ''सेट'' खरीद लिया।
अच्छा! पढ़ाई क्यूँ नहीं की?
''फेसबुक'' देख रही थी।
होमवर्क भी नहीं बनाया?
एस्से है, नेट पर देख लूँगी।
खाना बनाने में थोड़ी मदद करो।
मम्मी ''फेवरेट शो देख रही हूँ।
कभी न्यूज़ भी सुना करो।
गाना सुनने के बाद।
चलो बेटा! खाना खा लो।
आज घर पर नहीं, कहीं और चलो।
बाहर आकर घर चलने की जल्दी?
ए०सी० के बिना गर्मी हो रही है।
मैंने पुकारा ,क्यों नहीं सुना?
ओफ्फो, कान में हेडफोन था।
सुन! ज़रा महीने का खर्च जोड़ दे।
कलकुलेटर से कर लेना,
अच्छा! पापा तुझे बुला रहे हैं।
बाद में, दिन भर तो घर पर ही होंगे।
वॉट्सऐप छोड़, पहले मिल ले।
मम्मी! फ्रेंडस दोबारा ''ऑनलाइन'' नहीं होंगे।

प्रियंतरा भारती

(भोजपुरी कविता)

बदल गइल जमाना

देख केतना बदल गइल बा जमाना ए भाई,
अब त घरे-घरे लाग गईल बा वाईफाई।
सुतिये उठ अब लोग , दर्शन मोबाईल के करेला,
छोड़ चापाकल के, टीप के बटम, मोटर से पानी भरेला।
आ गइल बा ए०सी०, पंखा हो गइल फेल,
सुतल-बइठल शॉपिंग कर, गजब मोबाईल के खेल।
2G, 3G, 4G, अब 10G के बारी बा,
इ मॉर्डन जमाना में, बिना ड्राईवर के गाड़ी बा।,
बताब ए भइया, इ कइसन जमाना आइल,
छओ दिन के बचवा भी अब, टकाटक देखे मोबाईल।
इ मशीन का चक्कर में दुनिया, पीसा गईल बा भाई,
सोच, अभियो समय बा, अभियो से चेत जाई।

अतुल रॉय

नन्हीं तूलिका

तनु मेहता - वर्ग-IV

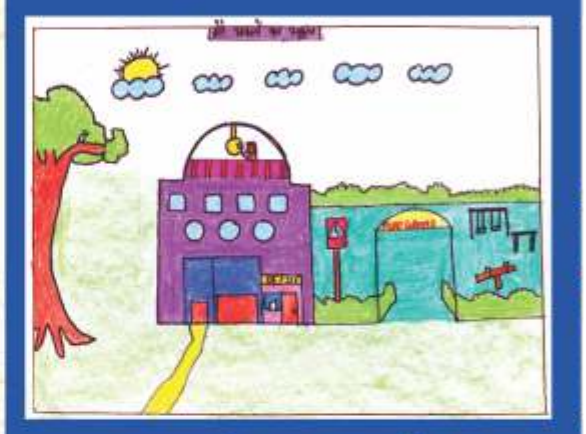

काकुली राय - वर्ग-IV

प्रिया राज - वर्ग-IV

पूजा - वर्ग-VII

सुजाता कुमारी

दूरभाष : 0612-3224919, 2661295 ई-मेल : info@kilkaribihar.org ब्लॉग : kilkaribihar.blogspot.in फेसबुक : www.facebook.com/kilkaribihar यूट्यूब : www.youtube.com/kilkaribihar

★ बच्चों द्वारा रचित, संपादित एवं बच्चों के लिए बाल मासिक अखबार । इस अखबार में छपी हुई रचनाएँ बच्चों के व्यक्तिगत विचार हैं। ★ बच्चों के लिए समर्पित